पेज - 1 निकिता पटेल (हिन्दी विभाग)
B.A - II वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर)
18 . 05 . 2020

मतिराम के पदों का भावार्थ

कुंदन को रंग - - - सी निकाई

(1) प्रस्तुत पद में राधा के अपूर्व सौंदर्य का वर्णन करते हुए मतिराम कहते हैं कि राधा के अंगों की सुन्दर गोराई इसप्रकार झलक रही है कि उसके सामने सोने का रंग भी फीका लग रहा है। यौवन और सौन्दर्य-भार के कारण राधा की आँखें आलस्य से भरी हुई है। उसकी चितवन में सुन्दर विलास फैला है। कवि कहते हैं कि राधा के राधा के सौंदर्य और उनकी मुस्कुराहट के मिठास पर ऐसा कौन होगा जो मिट नहीं जायेगा। क्योंकि

Scanned with CamScanner

भाव - (२)
राधा का सौन्दर्य ऐसा है कि जितनी बार इन आँखों से उन्हें निहारा जायेगा उनका सौन्दर्य और निखरता जायेगा।

(२) क्यों इन आँखिन ... ..
आपस रस - लोभी ।।

प्रस्तुत पद में राधा कहती है कि मेरी ये आँखें निर्भय होकर मोहन के शरीर की कांति को उनके सौन्दर्य को देख भी नहीं पाती। क्योंकि अच्छी तरह निहारने से कलंक लगता है।
इसलिए राधा कहती है कि इस गाँव में मथुरा रहकर कोई कैसे जी सकती है जहाँ कृष्ण को अच्छी तरह देखना भी कठिन हो।
इसलिए राधा की इच्छा

Sunday

पेज -③ होती है कि वन जाकर वही साधना करें, जिससे प्रसन्न होकर परमात्मा उन्हें या तो कृष्ण के हृदय से लगने वाली माला बना दें या फिर अधरों का रस पान करने वाली मुरली।

③ गुच्छन को आवतंस ...
. . आँखिन को फल पायो।

मतिराम कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने फूलों के गुच्छों की माला धारण कर रखी है। सिर पर मोर पंखों का मुकुट है। हाथों में लाल पल्लवों की छड़ी लिए हुए कृष्ण की छवि अति सुन्दर लग रही है। कवि कहते हैं कि हृदय पर सुन्दर माला धारण किए हुए कृष्ण जब गुनगुनाते हुए कुंज से बाहर निकलते हैं तो उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मानो आज आँखों ने अपने होने का फल पाया हो। अर्थात आँखों ने अपने होने की सार्थकता पायी हो।

Scanned with CamScanner

पेज - (५)

मोर पखा । मतिराम ' - - -
- - - . आँखि पान लुनाई ।

प्रस्तुत पद में मतिराम कहते हैं कि मोर - पंखों का मुकुट श्रीकृष्ण के मस्तक पर सुशोभित है । उनके गले में वनमाला शोभा दे रही है । उनकी मनोहर और चंचल कुंडलों, जो उन्होंने धारण कर रखी हैं, कि शोभा से उनकी छवि और भी निखर गयी है ।

आगे कवि कहते हैं कि श्रीकृष्ण की चंचल और विशाल आँखों को देखकर भला ऐसा कौन होगा जो इनके वश में नहीं हो जायेगा । उनके मुख के माधुर्य के साथ उनकी आँखों की लुनाई भी मीठा लगता है । यहाँ श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन किया गया है ।